॥ ॐ ॥ **श्री गुरुचरण कमलेभ्यो नमः** ॥卐॥

स्वस्ति श्रीमन्नृप शालिवाहन शक 1947

विश्वावसु नाम संवत्सर

दीपावली साधनाएँ - 2025

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ . . . .

श्री निखिल चेतना केन्द्र पुलिमामिडी, हैदराबाद (तेलंगाणा)

॥ ॐ ॥ **श्री गुरुचरण कमलेभ्यो नमः** ॥卐॥

दीपावली साधनाएँ - 2025

प्रिय साधक बन्धू / भगिनिओं . . . .

श्री निखिल चेतना केन्द्र हैदराबाद की ओर से दीपावली की विशेष साबर साधनाएँ दी जा रही है।

दीपावली की शुभकामनाएँ एवं धन, ऐश्वर्य, समृद्धी की प्राप्ति के लिए साधनात्मक आशिर्वाद।

परम पुज्यनिय सद्‌गुरुदेव स्वामी श्री निखिलेश्वरानन्द जी की असीम कृपा तले साधनाओं की परंपरा को लेकर आगे बढ़ रहे हम सब साधक इस बार दीपावली मे लक्ष्मी प्राप्ति संबंधित विशेष साबर साधनाएँ सम्पन्न करेंगे।

होली की रात्री, शिवरात्री, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी एवं दीपावली की रात्रियों को तांत्रोक्त सिद्धी रात्री कहा गया है।

मै इस बार धनत्रयोदशी से लेकर यम द्वितीया तक की पाँच दिनों की साधनाएँ दे रहा हूँ।

सभी साधक साधना सम्पन्न करे एवं अनुभव करे की आप सफलता की ओर अग्रसर है तो मुझे मेरे इस प्रयास का सफल अनुभव होगा, प्रसन्नता होगी ।

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ . . . .

आपका अपना गुरुभाई

डॉ. अनिलकुमार जोशी

॥ ॐ ॥ श्री गुरुचरण कमलेभ्यो नमः ॥卐॥

दीपावली विशेष साधनायें - 2025

दि. 18.10.2025 से दि. 23.10.2025

दि.18.10.2025, शनिवार - दोपहर 12:20PM तक गुरु द्वादशी है।

1) दि.18.10.2025, शनिवार, धन त्रयोदशी, धन्वन्तरी जयन्ती, यम दीप दान - 12:20 (दोपहर) के बाद त्रयोदशी है। इस त्रयोदशी को धन त्रयोदशी कहा जाता है। पांच (5) दिन की दीपावली का आरंभ इसी दिन से होता है। यम दीप दान रात्री मे करे।

प्रातः 06:00 बजे से 12:00 बजे दोपहर तक साधक गुरु स्मरण कर निम्न गुरु मंत्र का इक्किस (21) माला मंत्र जप कर बेसन के लड्डू का नैवेद्य अर्पण कर दीपावली उत्सव आरंभ करे।

मंत्र - **" ॐ ह्रीं श्रीं गुरौ प्रसीद श्रीं ह्रीं ॐ "**

इसके बाद साधक 12:30 दोपहर से लेकर पांच (5) दिन की दीपावली उत्सव का आरंभ समुद्रोत्पन्न लक्ष्मी के भाई दक्षिणावर्त शंख पुजन से करे। रात्री मे धन्वन्तरी पुजन करे।

दक्षिणावर्ति शंख कल्प प्रयोग - प्रथम पूजा स्थान मे लक्ष्मी-गणपति यंत्र / विग्रह की स्थापना कर उसका संक्षिप्त पूजन कर प्रार्थना करे कि, मै यह पाँच दिन मे जो भी साधनायें करूँगा, हे देवाधिदेव गणपति भगवान् वे निर्विघ्नता से पूर्ण हो ऐसी प्रार्थना करे। फिर गुरु यंत्र / विग्रह/ पादुका स्थापित कर उसका संक्षिप्त पूजन करे। गुरुजी से साधना आशिर्वाद प्राप्त करने लिये ग्यारह (11) माला गुरु मंत्र जप करे।

इसके बाद चौकी पर दक्षिणावर्ती शंख की स्थापना निम्न प्रकार से करे। प्रातः काल स्नानादि से निवृत होकर शुद्ध सफेद वस्त्र धारण करे और पहले से ही अगरबत्ती, घी का दीपक, कुंकुम, अक्षत, चाँदि का वर्क (जैसे मिठाई पर वर्क लगाते है) लगावे और शंख पर केसरसे "**श्रीं** " अक्षर लिखे फिर शंख का निम्न मंत्र से पूजन करे।

मंत्र - **" ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीधर करस्याय पयोनिधि जाताय श्री दक्षिणावर्त शंखाय ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीकराय पूज्याय नमः "**

शंख पर कुंकुम, चावल, इत्र आदि इसी मंत्र से चढ़ावे। फिर शंख को चांदी या तांबे के बर्तन मे स्थापित करे। सामने दूध से बना हुआ प्रसाद भोग के रूप मे लगाये, सुगंधित श्वेत पुष्प चढ़ाये और कर्पूर से आरती करे। इसके बाद दोनों हाथ जोडकर दक्षिणावर्ति शंख का ध्यान करे।

ध्यान -

" ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं श्री दक्षिणावर्त शंखाय भगवते विश्वरूपाय सर्व योगीश्वराय त्रैलोक्य नाथाय सर्व कामप्रदाय सर्व ऋद्धि समृद्धि वांछितार्थ सिद्धिदाय नमः ॐ सर्वाभरण भूषिताय प्रशस्यां गोपान्ग संयुताय कल्प वृक्षाधः स्थिताय कामधेनु चिन्तामणि नवनिधिरुपाय चतुर्दश रत्न परिवृत्ताय महासिद्धि सहिताय लक्ष्मी देवता युताय कृष्ण देवताकर ललिताय श्री शंख महानिधये नमः "

इसके बाद हकीक या स्फटिक माला से पाँच (5) माला निम्न मंत्र जप करे।

मूलमंत्र –

"ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं दक्षिणमुखाय शंखनिधये समुद्र प्रभावय नमः"

फिर इस शंख को दीपावली तक अपने पूजा स्थान मे ही रहने दे, बाद मे उसे लाल कपडे मे लपेट कर तिजोरी मे रख दे, तो उसके जीवन में निरन्तर व्यापारिक उन्नती होती रहती है और किसी भी प्रकार का अभाव नही रहता।

धन्वन्तरी पुजन - साधक रात्री 8:00 बजे बाद धन्वन्तरी यंत्र का संक्षिप्त पुजन कर, निम्न मंत्र की तीन (3) माला जप करे।

धन्वन्तरी देवता ध्यान -

सिंदोरुन्मध्यमानांद् मृत धृतकरः कोऽपि देवो व्युदिय
प्राज्यं पियुष कोषं शत शत मुदितैः प्राणि लोकेव्य तारिन्
कल्पेऽन्यस्मिंश्च भूयः स्त्रवदमृत रसांगा मसौ शिष्य वर्गे
तन्व द्धन्व तरिर्नौ व्यपनुदत्ती तमः श्री दिव्यो दासनाम्ना "

मूल मंत्र -

" ॐ ह्रीं वं धन्वन्तर्ये अमृत हस्ताय सर्व
रोग निवारकाय वं ह्रीं ॐ स्वाहा "

इस दिन साधक इस मंत्र से गुगुल द्रव्य से एक (1) माला हवन करने पर साधारण व्याधियाँ नष्ट हो जाती है। जो साधक तिल, घृत एवं सफेद कमल से एक (1) माला होम करता है उसको अनेक प्रकार के व्याधियों से छुटकारा मिलता है।

यम दीप दान - आटे का दीपक बनाकर, दीपक का दक्षिण दिशा की ओर मुख करके निम्न मंत्र पढे।

मंत्र - **" मृत्युनां पाश दंडाभ्यां कालेन श्यामया सह,**
त्रयोदश्यां दीप दानात् सुर्यजः प्रीयतां मम "

इसी दिन रात्री मे निम्न पंद्रहिया यंत्र ताम्रपत्र पर या भोजपत्र पर उत्कीर्ण करे और उस पर केसर युक्त चांवल निम्न मंत्र बोलकर एक सौ आठ (108) बार चढाये।

मंत्र - **" ॐ महालक्ष्मी आगच्छ आगच्छ धन प्रदाय नमः "**

8	1	6
3	5	7
4	9	2

यंत्र की संक्षिप्त पुजा करे, तीस (30) दीपक लगाये एवं निम्न मंत्र की तीस (30) माला जप कर यंत्र को सिद्ध करे।

मंत्र - **" ॐ ऐं ऐं श्रीं श्रीं लक्ष्मी आगच्छ आगच्छ ह्रीं ह्रीं नमः "**

ऐसा सिद्ध कीया हुआ यंत्र अपने बटुये (Purse) या तिजोरी मे रखने से वर्षभर धन की कमी नही होती।

2) दि.19.10.2025, रविवार - दीप दान - दीप दुर्गा पुजन।

3) दि.20.10.2025, सोमवार, नरक चतुर्दशी - अभ्यंग स्नान, यम तर्पण, सोमवती अमावस्या।

प्रातः सुर्योदय से पहले अभ्यंग स्नान करे। प्रातः काल चांवल और तिल को स्नान के समय अपने मस्तक पर घुमाना चाहिये। इससे नरक के भय का नाश होता है। उस समय निम्न प्रकार से प्रार्थना करे।

मंत्र - **" सीता लोप सहयुक्त सकण्टक दलान्वित।**
हर पापमपामार्गः भ्राम्यमाणः पुनः पुनः "

साधक बाजोट पर स्थापित दक्षिणावर्त शंख, गुरु विग्रह, गणेश विग्रह, यंत्र आदि की पुजा कर दीप प्रज्वलित करे। बाद मे दोपहर 11:00 AM से 12:00 PM के बीच मे यम तर्पण करे। जिन्हे पिता है वे पानी, अक्षत डालकर, जिन्हे
पिता नही है वे तिल युक्त जल से निम्न मंत्र धर्मराज जी के नामों से तर्पण करे। जैसे ....

1) यमं तर्पयामि, 2) धर्मराजं तर्पयामि, 3) मृत्युं तर्पयामि,
4) अंतकं तर्पयामि, 5) वैवस्वतं तर्पयामि, 6) कालं तर्पयामि,
7) सर्वभूत क्षयकरं तर्पयामि, 8) औदुंबर तर्पयामि, 9) दध्नं तर्पयामि,
10) नीलं तर्पयामि, 11) परमेष्ठीणं तर्पयामि, 12) वृकोदरं तर्पयामि,
13) चित्रं तर्पयामि, 14) चित्रगुप्तं तर्पयामि।

यम तर्पण के बाद दक्षिण दिशा की ओर मुख कर निम्न श्लोक को दस (10) बार उच्चारण करे।

श्लोक - **" यमो निहंतां पितृ धर्मराजो वैवस्वतो दंडधरश्च कालः।**
भूताधिपो दत्त कृतानुसारी कृतांत एतद्दशभि र्जपंती"

इस दिन सायंकाल घर के बाहर नरक निवृत्ति के लिए धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष रूपी चार बत्तियों का दीपक यम देवता के लिए सर्व प्रथम जलाना चाहिए। इसके पश्चात गौशाला, देववृक्षों के निचे, रसोई घर, स्नानघर आदि मे दीप जलाये। इस प्रकार दीप दान के बाद नित्य का पूजन करे।

4) दि.21.10.2025, मंगलवार, दीपावली उत्सव, लक्ष्मी-कुबेर पुजन -

पंचांग अनुसार लक्ष्मी-कुबेर पुजन का समय।
1) 3:00 PM से 4:30 PM दोपहर (राहुकाल है, इस मे लक्ष्मी पुजन का महत्व है, राहु काल का दोष नही होता)
2) 6:30 PM से 8:30 PM रात्रि मे भी लक्ष्मी पुजन के लीये विशेष मुहुर्त कहलाया जाता है।
3) 10:30 PM से 12:00 AM मध्यरात्रि मे लक्ष्मी-कुबेर पुजन का विशेष महत्व है।

मुहुर्त के अनुसार श्री महालक्ष्मी पुजन संपन्न करे।

महालक्ष्मी पुजन गत दीपावली पुस्तक से ले।

शाबर महालक्ष्मी साधना - दीपावली की रात्री मे लक्ष्मी पूजन के बाद मे शाबर महालक्ष्मी यंत्र के सामने निम्न शाबर मंत्र का पाँच (5) माला जप करने से अगले वर्ष दीपावली तक धन की कमी नही होगी और पूरा वर्ष सुख शान्ति, उल्लास से बितेगा ।

मंत्र –

"आवो लक्ष्मी बैठो आंगण,रोरी तिलक चढाऊँ।गले मे हार पहनाऊँ। वचनोकी बांधि,आवो हमारे पास ।पहला वचन श्रीराम का,दुजा वचन ब्रह्मा का, तीजा वचन महादेव का। वचन चुके तो नर्क पडे। सकल पंच मे पाठ करु। वरदान नही देवे, तो महादेव शक्ति की आन "

इसके बाद हो सके तो श्रीसुक्त का सोलह (16) पाठ संपन्न करे, लक्ष्मी सुक्त एक (1) बार और पद्मावती स्तोत्र का एक (1) बार पाठ करे। अनुभव करके बतायें की आपके घर मे एक वर्ष तक लक्ष्मी (धन) का सुख, सौभाग्य का आगमन हुआ है या नही ?

श्रद्धा विश्वास ही फल की कसौटि है।

॥ गुरु कृपा ही केवलम् ॥

5) दि.22.10.2025, बुधवार, बलि प्रतिपदा, व्यापार मुहुर्त, गोवर्धन पुजा - व्यापार खोलना, वही-खाता पुजन का मुहुर्त इस दिन है। गोवर्धन पुजा (अन्नकुट) रात्री मे करे।

व्यापार, वही-खाता मुहुर्त - 1) प्रातः 3:00 AM से 6:00 AM, 2) 6:30 AM से 9:30 AM, 3) 11:00 AM से 12:30 PM.

गोवर्धन पूजा - गौ-बछड़ा एवं बैलों की भक्तिपूर्वक पूजा करनी चाहिए। घर मे बने भोजन का अंश गाय को खिलाना चाहिए। इसके बाद गोवर्धन पूजा (अन्नकुट पूजा) करनी चाहिए। इसके लिए जो लोग गोवर्धन पर्वत के पास नही है, वह गोबर से या भोज्यान्न से गोवर्धन पर्वत बना ले। अन्न से बने गोवर्धन को ही अन्नकुट कहते है। उसी को क्रमशः पाद्य, अर्ध्य, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवद्य, आचमन, ताम्बूल, दक्षिणा निम्न मंत्र से समर्पित करे।

मंत्र - **" ॐ ह्रीं ह्रीं गोवर्धनाय भद्राय ऐं ऐं ॐ नमः "**

***

6) दि.23.10.2025, गुरुवार, यम द्वितीया, भाई दुज - इस दिन चौदह (14) अर्घ्य दान एवं यम पुजन करे।

इस दिन प्रातः काल चन्द्र दर्शन करना चाहिए। यदि संभव हो तो यमुना स्नान करना चाहिए अन्यथा घर मे ही तेल लगाकर स्नान करना चाहिए। मध्यान्ह काल मे अपने बहन के घर जाकर वस्त्र और द्रव्यादि द्वारा बहन का सम्मान करना चाहिए एवं वही भोजन करना चाहिए।

अतः ऐसी मान्यता है कि जो लोग इस दिन सुहागन बहनोंको वस्त्र, दक्षिणा आदि से संतुष्ट करते है उन्हे एक वर्ष तक कलह, अपकिर्ती और शत्रुभय आदि का सामना नही करना पड़ता। धन, यश, आयु और बल की वृद्धि होती है।

सायंकाल घर मे दीपक (बिजली) जलाकर दीपदान करना चाहिए।

दीपावली की विशेष धन-प्रदायक साधनायें -

1) शाबर महालक्ष्मी साधना - लक्ष्मी पुजन के बाद साधक शीघ्र सिद्धिदायक शाबर महालक्ष्मी साधना संपन्न करे। इस मे शाबर महालक्ष्मी यंत्र को किसी पिले रेशमी वस्त्र पर स्थापन करे। साथ ही अष्टलक्ष्मी प्रतिक अष्ट रत्न यंत्र के अष्टदिशाओ मे स्थापन कर संक्षिप्त पुजन करे। घृत का दीपक जलाये।

विनियोग - ॐ अस्य श्री धनप्रद महालक्ष्मी सिद्ध शाबर मंत्रस्य, श्री विष्णु ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री महालक्ष्मी देवता, श्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्लीं किलकम् मम सकल कामना सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। (जल छोडे)

ऋष्यादिन्यास - विष्णु ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप् छंदसे नमः मुखे, श्रीमहालक्ष्मी देवतायै नमः हृदि, ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये, श्रीं शक्तये नमः पादयो, क्लीं कीलकाय नमः सर्वांगे, स्पर्श करे।

कर न्यास -	**हृदयादि न्यास -**
श्रीं ह्रीं क्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः	श्रीं ह्रीं क्लीं हृदयाय नमः
श्रीं ह्रीं क्लीं तर्जनीभ्या नमः	श्रीं ह्रीं क्लीं शिरसे स्वाहा
श्रीं ह्रीं क्लीं मध्यमाभ्यां नमः	श्रीं ह्रीं क्लीं शिखायै वषट्
श्रीं ह्रीं क्लीं अनामिकाभ्यां नमः	श्रीं ह्रीं क्लीं कवचाय हुं
श्रीं ह्रीं क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः	श्रीं ह्रीं क्लीं नेत्र त्रयाय वौषट्
श्रीं ह्रीं क्लीं करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः	श्रीं ह्रीं क्लीं अस्त्राय फट्

मूल मंत्र -

“ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभूवन पालीन्यै महालक्ष्मी अस्माकं दारिद्रयं नाशय नाशय प्रचुरं धनं मे देही देही क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ ”

दीपावली की रात्री इस उपरी मंत्र का एक हजार (1000) जप कमलगट्टा माला से करे। हो सके तो उसी रात्री को या दुसरे दिन प्रातः एक माला (108) बार घृत, शक्कर (चिनी), खश की समीधा, सफेद चंदन, तगर, जटामांसी, पंचमेवा, बादाम या तरबुज के बीज से आहुति प्रदान करे। महालक्ष्मी यंत्र सिद्ध होगा और वर्ष भर के लीये घर मे महालक्ष्मी जी का आगमन होगा। दृष्टांत के लीये यह हवन करते समय या समाप्ती पर अवश्य अपने घर पर कोई न कोई सुहागन आती है। यह महालक्ष्मी जी आने का संकेत है (मेरा अनुभव है)।

सामग्री - धनदा यक्षिणी यंत्र+धनदा यक्षिणी माला

2) धनदा यक्षिणी साधना -

साधक पिले वस्त्र या लाल वस्त्र धारण कर धन त्रयोदशी से लेकर भाईदुज तक जो इस वर्ष 18.10.2025 से लेकर 23.10.2025 तक है। इस मे किसी एक दिन साधक, सुर्योदय से सुर्यास्त तक वट वृक्ष के निचे बैठ कर निम्न मंत्र की सौ (100) माला (10000) जप करना है। केवल धनदा यक्षिणी यंत्र अपने पास रखना है और धनदा यक्षिणी माला से जप करना है। धनदा यक्षिणी प्रत्यक्ष होकर कृपा करेगी या अप्रत्यक्ष रूप मे उसे धन प्रदान करेगी चालीस (40) दिन मे।

मंत्र - **“ ॐ ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः ”**

सामग्री - धनदा यक्षिणी यंत्र+ धनदा यक्षिणी माला

****

3) धनदा यक्षिणी साधना -

दीपावली के पांच दिनों मे कोई भी एक दिन पीपल के वृक्ष के निचे बैठकर, पिले वस्त्र या पिले आसन पर बैठकर, धनदा यक्षिणी यंत्र को पास मे रखकर धनदा यक्षिणी माला से निम्न मंत्र का जप दिन के 12:00 बजे से लेकर रात के 12:00 बजे तक सौ (100 माला) 10,000 जप पुर्ण करे। धनदा यक्षिणी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उसकी धन की समस्या दुर करेगी।

मंत्र - **“ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धनं धनं धनं कुरु कुरु स्वाहा ”**

एक ही आसन मे बैठकर मंत्र जप करने पर विशेष अनुभव होगा।

सामग्री - धनदा यक्षिणी यंत्र+धनदा यक्षिणी माला

****

4) शिवलिंग साधना -

दीपावली के दिन से लेकर पुर्ण कार्तिक मास मे कोई भी सात (7) दिन, पारद शिवलिंग या स्फटिक शिवलिंग या मिट्टी के शिवलिंग पर सात (7) बिल्व पत्र चढाकर निम्न मंत्र की एक (1) माला जप (रुद्राक्ष या स्फटिक माला) से करने से धन की कितनी भी गंभीर समस्या हो उसका उपशमन होगा।

मंत्र - **“ ॐ ह्रीं श्रीं ठं ठं नमो भगवते रुद्राय मम सर्व कार्याणि साधय मां रक्ष शीघ्रं मां धनिनं कुरु कुरु हुं फट् श्रियं देही प्रज्ञां देही मम आपत्तीं निवारय स्वाहा ”**

सामग्री - पारद या स्फटिक शिवलिंग+रुद्राक्ष या स्फटिक माला

* श्रीसूक्त पाठ *

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्त्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मआवह ॥1॥
ता म आवह जातवेदो लक्ष्मीमन पगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरूषानहम् ॥2॥
अश्व पूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीमर्दिवी जुषताम् ॥3॥
कांसोऽस्मितां हिरण्य प्राकारा माद्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥4॥
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टा मुदाराम्।
तां पद्मिनीमिं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥5॥
आदित्य वर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्याऽलक्ष्मीः ॥6॥
उपैतु मां दैवसखः कीर्तिश्च मणिनासह।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिम् वृद्धिं ददातु मे ॥7॥
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठाम् लक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिम समृद्धिं च सर्वान् निर्णुद मे गृहात् ॥8॥
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥9॥
मनसः काममा कूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूप मन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥10॥
कर्दमेन प्रजा भूतामयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥11॥
आपः स्त्रजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वसमे गृहे।
निचदेवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥12॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥13॥
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥14॥

ता म आवह जातवेदो लक्ष्मीमन पगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योश्वान् विन्देयं पुरूषानहम् ॥15॥
यः शुचिः प्रयतोभूत्वा जुहुयादाज्य मन्वहम्।
सूक्त पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥16॥
इति श्रीसुक्तम् समाप्तः।

****

* लक्ष्मी सूक्त *

पद्मानने पद्मिनि पद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि ।
विश्वप्रिये विश्वमनोऽनुकूले त्वत्पाद पद्ममयि सन्निधत्स्व ॥
पद्मानने पद्मऊरू पद्माक्षी पद्म सम्भवे ।
तन्मे भजसिं पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥
अश्वदायी गोदायी धनदायी महाधने ।
धनं मे जुषतां देवि सर्वांकामांश्च देहि मे ॥
पुत्र पौत्र धनं धान्यं हस्त्यश्वादि गवेरथम् ।
प्रजानां भवसी माता आयुष्मंतं करोतु मे ॥
धनमाग्नि धनं वायुर्धनं सूर्योधनं वसु ।
धनमिंद्रो बृहस्पति र्वरुणां धनमस्तु मे ॥
वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा ।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः॥
न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभोना शुभामतिः।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां सूक्त जापिनाम् ॥
सरसिज निलये सरोजहस्ते धवल तमांशुक गंधमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवन भूतिकरी प्रसीद मह्यम् ॥
विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधव प्रियाम्।
लक्ष्मीं प्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युत वल्लभाम् ॥
महादेव्यै च विद्महे विष्णु पत्न्यै च
धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥

चन्द्रप्रभां लक्ष्मीमेशानीं सूर्याभां लक्ष्मीमेश्वरीम्।
चन्द्र सूर्याग्नि संकाशां श्रिय देवी मुपास्महे॥
श्रीवर्चस्व मायुष्य-मारोग्य-माभिधाश्च शोभमानं महीयते।
धान्य धनं पशु बहुपुत्र लाभम् सत्संवत्सरं दीर्घमायुः॥
इति लक्ष्मी सुक्तम् समाप्तः।

****

* **पद्मावती स्तोत्र** *

श्रीमद् गीर्वाण चक्रस्फूट मुकुट तटि दिव्य माणिक्यमाला ।
ज्योतिर्ज्वाला कराला स्कुरित मुकुरिका दृष्ट पादार विन्दे ॥
व्याघ्रोरुल्का सहस्र स्कुरज्वलन शिखालोलपाशां कुशाड्ये ।
आं क्रों ह्रीं मन्त्ररुपे क्षपित कलि मले रक्ष मां देवि पद्मे ॥1॥
भित्वा पाताल मूलं चल चलित चलीते व्याल लीला कराले ।
विद्युत्छण्ड प्रचण्ड प्रहरण सहितैः सदभुजै स्तर्जयन्ति॥
दैत्येन्द्रं क्रूर दंष्ट्र किट किट घटिते स्पष्ट भीमाट्टहासे ।
मायाजी मूतमाला कुहरित गगने रक्ष मां देवि पद्मे ॥2॥
कूजत्को दण्ड काण्डो डमर विधुरित क्रूर घोरापसर्ग ।
दिव्यं वज्रातपत्रं प्रगुणमणि रणत्किंकिंणी क्वारम्यं ॥
भासव्दैडूर्य दण्ड मदन विजयिनो विभ्रती पार्श्वभर्तु ।
सादेवो पद्महस्ता विघटयुत महाडामरं मामकोणं ॥3॥
भृंगी काली कराली परिजन सहिते चण्डि चामुण्डि नित्ये ।
क्षां क्षी क्षूं क्षः क्षणार्द्धे क्षतरिपु जिव्हे ह्रीं महामन्त्र रुपे ॥
भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रः भृंग संग भृकुटि पुटतटे त्रासि तोछाम दैत्ये ।
झां झीं झं झः प्रचण्डे स्तुति शतमुखरे रक्ष मां देवि पद्मे ॥4॥
चंचत्कांची कलापे स्तनतट विलुठत्तार हारावली के।
प्रोपुल्ल-त्पारिजात द्रुम कुसुम महामंजरी पूज्यपादे ॥
द्रां द्रीं क्लीं ब्लुं व्रीं समेते भुवन वसकरी क्षोभिणी द्राविणी त्वं ।
आं ऐं औं पद्महस्ते कुरु कुरु घटने रक्ष मां देवि पद्मे ॥5॥

लीला व्यालोल निलोत्पल दलनयने प्रज्वल द्वाडवाग्निः ।
उद्यज्वाला स्फुलिंग स्फुर दरुण करुदग्र वज्रांग हस्ते ।
ह्रां ह्रीं ह्रं ह्रौं ह्रः हरति हर हर हूंकार भीमेक नादे ।
पद्मे पद्मसनस्थै व्यय नय दुरितं रक्ष मां देवि पद्मे ॥6॥
कोपं वं जं सं हं सः कुवलय कलितोद्दाम लीला प्रबंधे ।
झां झीं झूं झः पवित्रे शशिकर धवले प्रक्षरक्षीर गौरे ॥
व्याल व्याबद्ध जूटे प्रबल बल महाकाल कुटं हरंति ।
हाऽ हाऽ हूँकार नादे कृतकर कमले रक्ष मां देवि पद्मे ॥7॥
प्रतर्वाला क्वरस्मि छुरितघन महा सांद्र सिन्दूर धूली ।
संध्या रागा रुणांगी त्रिदश वर वधू वंद्य पादार विन्दे ॥
चंच्चण्ड सिधारा प्रहतरिपु कूले कुण्डलो घृष्ट गण्डे ।
श्रां श्रीं श्रृं श्रः स्मरंति मदगज गमने रक्ष मां देवि पद्मे ॥8॥
विस्तीर्णे पद्मपीठे कमलदल निवासोचिते काम गुप्ते ।
लां तां ग्रीं श्रीं समेते प्रहसित वदने दिव्य हस्ते प्रशस्ते ॥
रक्ते रक्तोत्पलांग प्रतिवहसि सदा वाग्भवं काम बीजं॥
हंसारुढे त्रिनेत्रे भगवति वरदे रक्ष मां देवि पद्मे ॥9॥
षट्कोणे चक्रमध्ये प्रणव वरयुते वाग्भवे काम राजे ।
हंसारूढे सविन्दो विकसित कमले कर्णिकाग्रे निधाय ॥
नित्ये क्लिन्ने मदाद्रै द्रवयसि सततं सां कुसे पाशहस्ते ।
ध्यानात् संक्षोभयन्ति त्रिभुवन वशकृद् रक्ष मां देवि पद्मे ॥10॥
आं क्रों ह्रीं पंचवर्णे लिखित प्रवर षट्चक्रे मध्ये हस् क्लीं ।
क्रौं क्रौं पत्रां तरालै स्वरपरि कलिते वायुना वेष्टितांगी ॥
ह्रीं वेष्ट्यां रक्त पुष्पैर्जपित दल महाक्षोभणी द्राविणी त्वं ।
त्र्यैलोक्यं चालयति सपदि जनहिते रक्ष मां देवि पद्मे ॥11॥
ब्रह्माणी कालरात्री भगवती वरदे चण्डि चामुण्डि नित्ये ।
मातः गांधारि गौरी धृति मति विजये कीर्ति ह्रीं स्तुत्य पद्मे ॥

संग्रामे शत्रु मध्ये ज्वलद नल जले वेष्टि तेन्यैः सुरास्ते:।
क्षां क्षों क्षुं क्षः क्षरगार्धे क्षतरिपु निबहे रक्ष मां देवि पद्मे ॥ 12॥
खङ्गैः कोदण्ड काण्डे मुसल हलहरें बाण नाराच चक्रे ।
शक्त्या सल्य त्रिशूलै वर फरगा ससरै मुदगरैर्मुष्टि दण्डे ॥
पासे पाषाराग वृक्षे वर गिर सहितै रिष्ट शस्त्रैर्मात्यैः:।
दुष्टानां दारयंति वरभुज ललिते रक्ष मां देवि पद्मे ॥13॥
यस्या देवे नरेंद्रैरमर परिगणैः किन्नरै दानवेन्द्रैः ।
सिद्धैर्नागेन्द्र यक्षर्वर मुकुटतटै धृष्ट पादार विन्देः ।
सौम्ये सौभाग्य लक्ष्मी दलित कलिमले पद्म कल्याणमालै ।
अम्बे काले समाधि प्रकट्य परमं रक्ष मां देवि पद्मे ॥14॥
यूपे-श्चन्दन तंदुले शुभ महा गन्धेश्च मन्त्रालिके ।
नानावर्ण फलैः विचित्र सरसैः दिव्यं मनोहारिभिः ॥
दीपे नैवद्य वस्त्रैरन्तु भवनुकरै भक्तियुक्तं पदत्वां ।
राज्यं हेत्वां ग्रहण भगवति वरदे रक्ष मां देवि पद्मे ॥15॥
मातः पद्मिनी पद्मराग रुचिरे पद्म प्रसूनानने ।
पद्मे पद्म वनस्थिते परिल सत्यद्माक्षि पद्मालये ॥
पद्मामोदिनी पद्मराग रुचिरे पद्म प्रसूनार्चिते ।
पद्मोल्लासिनि पद्मनाभि निलये पद्मालयं पाहि मां ॥16॥
दिव्य स्तोत्रं पवित्रं पटुतर पठितं भक्तिपूर्वं त्रिसंध्यं ।
लक्ष्मी सौभाग्य रुपं दलित कलिमलं मंगलं मंगलानां ॥
पूज्या कल्याणमालां जनयति सततं पार्श्वनाथ प्रसादात ।
देवि पद्मावती नः हसित वदन यस्तुता दासवेन्द्रै ॥17॥
या देवि त्रिपूरा पुरात्रयगता शीघ्रासि शोधप्रदा ।
या देवि समय समस्त भुवने संगीतयते कामदा ॥
तारामान विमर्दिनी भगवति देवि च पद्मावती ।
सास्ता स्वागतस्था मेव नियतां मातेति तुभ्यं नमः ॥18॥
इति श्री पद्मावती स्तोत्र समाप्तः।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ . . . .

श्री निखिल चेतना केन्द्र पुलिमामिडी, हैदराबाद (तेलंगाणा)

मोबाईल - 9391029811, 9849069834.